[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3568

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रंगो की बढती कीमतों का तैलचित्र व्यवसाय पर प्रभाव – एक अध्ययन

डॉ० रश्मि जैन
सहा. प्राध्या. (अर्थशास्त्र)
शा. म. ल. बा. क. महा. इन्दौर
Email:Rashmigovil4@gmail.com

संसार के समस्त प्राणियों मे केवल मानव एक ऐसा प्राणी है जो सोन्दर्य की अनुभूति करता है। मानव सभ्यता मे कला की उत्पत्ति मानव मन मे सोन्दर्य के प्रति जिज्ञासा के कारण हुई है। इसके माध्यम से मनुष्य अपने भाव, मन की अनुभूति व्यक्त करके आन्नद महसूस करता है अर्थात उसकी सृतनात्म प्रवृति की अभिव्यक्तिी कला के माध्यम से करता है। इसमें चित्र,मूर्ति अभिनय,गायन,वादन एवं हात्तकोथत शामिल है। इसका उद्देश न केवल सृजन करना है बल्कि यह संस्कृति की परम्परा को बनाये रखने मे भी सहायक होता है, जो जनकल्याण के लिए उपयोगी है। कला को सामान्यतः दो वर्गो मे बाटॉ जाता है– ललितकला एवं व्यवसायिक कला ललितकला का मुख्य उद्देश्य स्वतः सूखाय होता है जो मन को आन्नद देता है दुसरी और व्यवसायिक कला एक ऐसा कार्य है जिससे किसी की जिविका का निर्वाह होता समाज की आवश्यकताको की पूर्ति करने मे व्यवसायिक कला का निरन्तर योगदान रहा है। एक उत्पादक इसी बात को ध्यान मे रखकर अपना उत्पादन करता है। और उस उत्पादन को सर्व. उपयोगी एवं लाभप्रद बनाने के लिए समय के अनुसार उसमे रगो के माध्यम से परिवर्तन करता है।
इन्टिरियर डिजाइनिंग और चित्रकारिता आज एक प्रमुख लाभप्रद व्यवसाय का रूप ले चुकी है। आन्तरिक सज्जा मे तैलचित्रो का अधिक प्रयोग कर इसकी ख्याति को जन जन तक पहुचॉ दिया है। प्राचीनकाल मे राजा–महाराज एवं धनी व्यक्ति अपनी गृहसज्जा मे तैलचित्रो का प्रयोग बढे पैमाने पर करते थे। आमजनता कच्ची दीवारों पर जमीन पर कच्चे रंगो से चित्रकारी करते थे लेकिन आजकल इन्टिरियर डिजाइनों मे अच्छे किस्म के रंगो का प्रयोग गृहसज्जा मे करके इस व्यवसाय मे नये आयाम खोल दिए है जो व्यक्तियों की आय व रोजगार का साधन बन रहा है। इस व्यवसाय मे भावों को ध्यान मे रखकर रंगो के प्रयोग से वस्तुओं की सुन्दरता और विविधता को बढा देते है।

तैलचित्र व्यवसाय मे विभिन्न प्रकार के रगो का प्रयोग किया जाता है जैसे जलरंग, पोस्टर कलर, तैलचित्र, टेम्परा,रंग, क्रेआन आदि कलाकृति मे रंगो का महत्वपूर्ण स्थान है। "कलाकृति नाम है उसका जो आन्नद की अनूभूति कराए चाहे वह रंग का एक धब्बा ही क्यों न हो । एक चित्रकार रंगो से गुणों की भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है। वह रंगों से किसी भी ध्वनी व वातावरण को बता सकता है। रंग के बिना संसार अर्थहीन है इसी से सुन्दरता की पहचान होती है।

अध्ययन के उद्देश्य– तैलचित्र व्यवसाय में रंगो का प्रयोग बडे पैमाने पर किया जाता है एक चित्र को बनाने मे रंगो की कई परते चढाई जाती है और यह एक महत्वपूर्ण कच्चामाल है और उसकी कीमतो मे निरन्तर बढोत्तरी हो रही है। जिससे चित्रो कि लागत भी बढी है। इसका प्रभाव तैलचित्र व्यवसाय पर भी पडा है इस शोध पत्र में निम्न बातों का अध्ययन करने का प्रभाव किया है–

1. 2003–04 के मूल्यों का 2013–14 के मूल्यों से तुलना करना।
2. चित्रों की लागत की तुलना मे चित्रो के मूल्य एवं मॉग मे वृध्दि अधिक हुई है।

पिछले 10 वर्षों मे हमारी अर्थव्यवस्था मे मॅहगाई बढी है, मुद्रा स्फीति बढी है, जिससे वस्तुओं के दाम भी बढे है। इस बात को जानने के लिए इन्दौर की 2 ऐजेन्सियों से व्यक्तिगत सम्पर्क कर मूल्य ज्ञात किए है।एक व्यवसाय को स्थापित करनें मे उत्पादक को 2 प्रकार की लागतों को वहन करना पडता है। कुछ वस्तुओं एवं मशीनो पर एक ही बार व्यय करना पडता है जो कि स्थिर लागत कहलाती है और कुछ वस्तुओं पर हर इकाई के उत्पादन पर व्यय करना पडता है जो कि परिर्वतनशील लागतें होती है। तैलचित्र व्यवसाय मे भी ईजल डाकीचैअर, फोकसलेम्प, ब्रश आदि पर एक बार व्यय कर लम्बे समय तक प्रयोग किया जा सकता है। रंग, मिडियम, वाशर, कैरोसिन पैन्सिल, बोर्ड, केनवास आदि हर चित्र के साथ खरीदना पडता है। अतः इन्ही के मूल्यो का तैलचित्र व्यवसाय पर ज्यादा प्रभाव पडता है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

तैलचित्रो मे प्रयुक्त सामग्री के मूल्य

सामग्री	वर्ष 2003–04	वर्ष 2013–14
ईजल	150रू.	620बुडन , 650 स्टील
डाकीचैअर	200रू.	1200 रू.
फोकसलेम्प	100रू.	800 रू.
पेलेट	60रू.	150रू.
वाशर	100रू. स्टील	90रू. प्लास्टीक
ब्रश	70रू.	350रू.
बोर्ड	100रू.	500रू.
कलर	200रू.	500रू.
केनवास 2'3	60रू.	360रू.
मिडियम	145रू.	220रू.
डीपर	15रू.	25रू.
चरकोल पेन्सिल	10रू.	150रू.
केरोसिन	3रू.लिटर	25रू.

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 2003–04 मे एक तेलचित्र की स्थायी लागत 780 रू. आती थी वही 2013–14 मे बढकर 3740रू. हो गई है अर्थात इन वस्तुओ की कीमतों मे 5 गुना की वृध्दि हुई है।

हर चित्र के साथ लगने वाली वस्तुओं की लागत जहॉ 2003–04 मे 430रू. आती थी वही 2013–14 मे 1300रू. आती है अर्थात इन वस्तुओ की कीमत मे 3 गुना वृध्दि हुई है। इस विश्लेषण से स्पष्ट है कि परिर्वतनशील लागतो की तुलना मे स्थायी लागत मे अधिक वृध्दि हुई है। किसी वस्तु कि लागत बढने का प्रभाव उसके मूल्य पर भी पडता है। लागतो के साथ साथ मूल्यो मे भी वृध्दि होती है लेकिन तैलचित्रो के मूल्यो को ज्ञात करना कठिन कार्य है इस पर बाजार के नियम कार्य नही करते है बल्कि ग्राहक की मानसिक स्थिती और पसन्द प्रभाव डालती है अतःइसके मूल्यों का आकलन नही किया जा सकता है। तैलचित्र का मूल्य कलाकर की कला के साथ साथ उसकी प्रसिध्दी पर भी निर्भर करता है। तैलचित्र की लागत में 5 प्रतिशत की वृध्दि हुई है लेकिन चलन मे एक तैलचित्र मूल्य मे करीब 10 प्रतिशत या इससे अधिक की वृध्दि हुई है। इससे उपभोक्ताओ की रूची बढी है और मॉग मे वृध्दि हुई है जिससे उसका प्रयोग बढा है।

यहॉ पर अर्थशास्त्र के नियम मूल्य बढने से मांग घटेगी के स्थान पर मूल्य बढने से मांग बढेगी अर्थात गिफिन विरोधाभास लागू होगा जो कि उपभोक्ता की बदलती मानसिकता का परिचायक है।

पिछले 15 वर्षो मे जहॉ लागत बढी है वही तैयार तैलचित्र के मूल्यो मे भी सकारात्मक वृध्दि हुई है। जिसका प्रभाव तैलचित्रो की मॉग पर पडा है। देश मे विकास दर बढी है जिससे विकास के सभी संकेतकों जैसे प्रति व्यक्ति आय, जीवनस्तर मे वृध्दि, उपभोग मे वृध्दि ,आरामदायक एवं विलासिता कि वस्तुओं की मॉग मे वृध्दि, शिक्षा के स्तर मे वृध्दि हुई है जिसका प्रभाव आन्तरिक सज्जा व्यवसाय पर अच्छा पडा हैं देश मे 10 प्रतिशत की दर से यह व्यवसाय बढ रहा है और इसमे तैलचित्र और उसमें नवीन प्रयोगो जैसे सिरामिक,कोलाज, मार्डन आर्ट का प्रचलन बढा है अतः रंगो के मूल्य वृध्दि से इस व्यवसाय पर नकारात्मक प्रभाव न पड कर इस व्यवसाय को नई ऊचाइयो की और ले जाने की संभावना है। जो विकास के नए द्वार खोलेगी।

सन्दर्भ –

1. कलाविचार, शुभदेव श्रौत्रिय
2. आधुनिक भारतीय चित्रकला, गिरिराज किशोर अग्रवाल
3. अर्थशास्त्र के सिध्दान्त, वी. सी. सिन्हा
4. "Art in every day life"Goldstein and Goldstein
5 गृहसज्जा का परिचय, डॉ. मंजू पाटनी